क्योंकि हम नारी हैं!

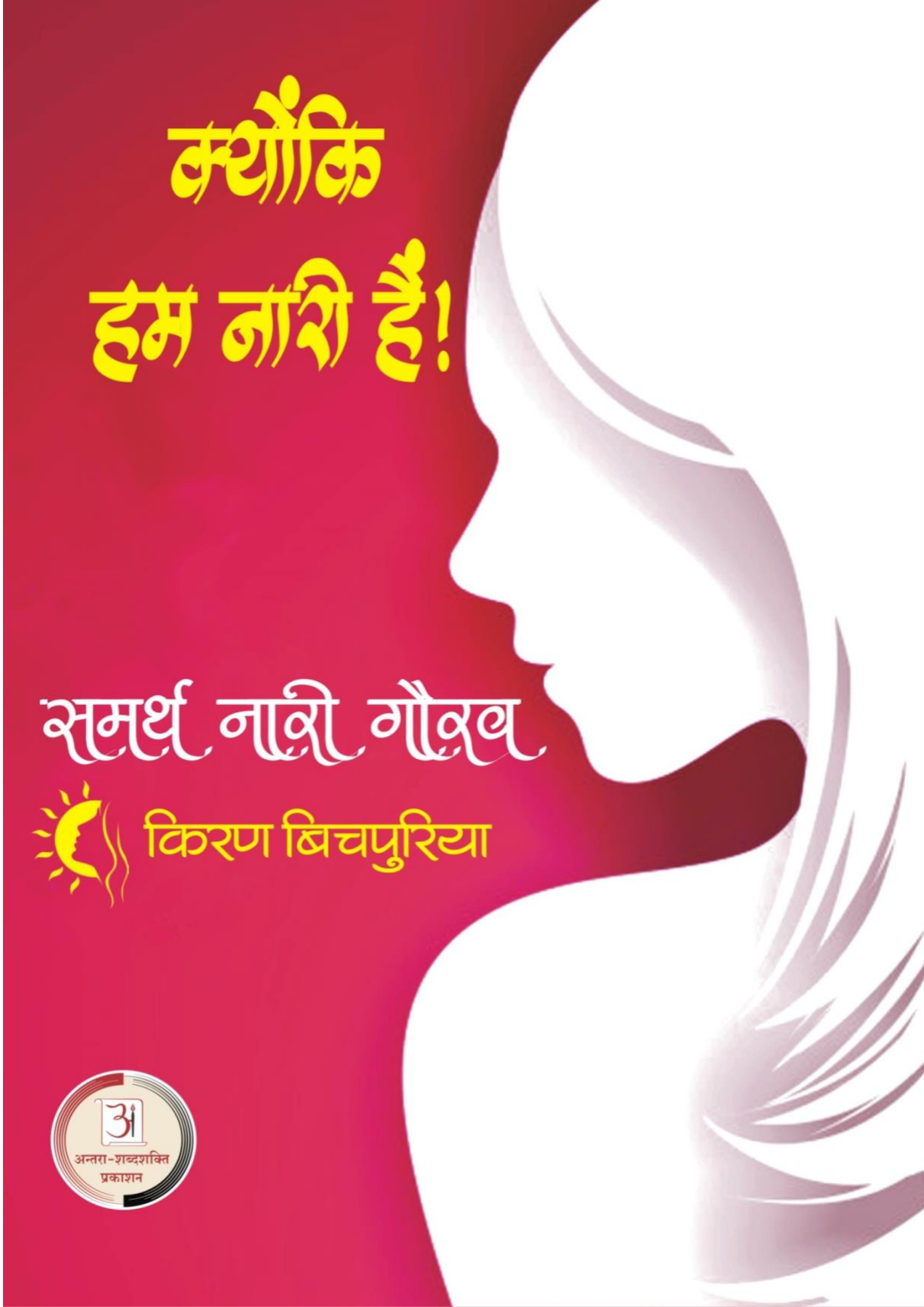

समर्थ नारी गौरव

किरण बिचपुरिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

क्योंकि हम नारी हैं!

किरण बिचपुरिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-81-951277-2-6

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail-com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - किरण बिचपुरिया 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY KIRAN BICHPURIYA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

क्योंकि हम नारी हैं!

ईश्वर की गढ़ी वह खूबसूरत कृति है, जिसके बिना सृष्टि की कल्पना ही नहीं की जा सकती। ये वो धुरी है जिसके गर्भ में जीवन पनपता है।

'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' की शुभकामनाएं, बोलना उतना ही आसान है जैसा कि 'स्वतंत्रता दिवस मुबारक़ हो' कहना या अन्य कोई भी दिवस की बधाई देते समय औपचारिकताएं निभाना। सब जानते हैं, इस सब की सच्चाई, एक तिथि या अवकाश से ज्यादा कुछ भी नहीं। कभी गौर कीजियेगा, नब्बे प्रतिशत महिलाओं के मुंह से इस बधाई की प्रतिक्रिया स्वरुप खिसियाता 'थैंक्स' ऐसे निकलेगा जैसे अस्पताल के बिस्तर पर पड़े किसी बीमार बच्चे को हैप्पी बर्थडे बोल दिया गया हो। पर एक बात यह भी है कि कोई 'विश' करे, अच्छा तो लगता ही है!

सच समझे आप, 'स्त्रियों' को समझ पाना इतना आसान नहीं है। स्त्री मन की थाह का अंदाजा, शायद स्त्री को स्वयं भी नहीं होता। फिर भी इन बातों को समझकर शुभकामनाएं भेजेंगे, तो उसे अच्छा लगेगा!

आज जिस इंसान पर कोई स्त्री आग-बबूला हो रही है, कल उसी के लिए नम आंखों से दुआ मांगती दिखेगी। क्योंकि उसे परवाह है अपनों की, क्रोध उस खिसियाहट का परिणाम है कि अपनों को उसकी परवाह क्यों नहीं? ये प्रेम है उसका।

"जाओ, अब तुमसे कभी बात नहीं करुंगी" कहकर दस सेकंड बाद ही सन्देश भेजेगी, "सॉरी यार, कॉल करूं क्या?" क्योंकि वो आपके बिना रह ही नहीं सकती, उसे क़द्र है आपकी उपस्थिति की। ये रिश्तों को निभाने की ज़िद है उसकी।

रात भर सिरहाने बैठ बीमार बच्चे का माथा सहलाती है, कभी अपनी नींदों का हिसाब नहीं लगाती। ममता है उसकी।

हिसाब से घर चलाते हुए, भविष्य के लिए पैसे बचाती है और एक दिन वो सारा धन बेहिचक किसी जरूरतमंद को दे आती है। दयालुता है उसकी। कोई उसकी मदद करे न करे, लेकिन वो सबकी मदद को हमेशा तैयार रहती है। संवेदनशीलता है उसकी। अपने आंसू भीतर ही समेटकर, दूसरों की आंखें पोंछ उन्हें दिलासा देती है। दर्द को समझने की शक्ति है उसकी।

अपनों के लिए ढाल बनकर दुश्मन के सामने खड़ी हो जाती है। हिम्मत है उसकी। बार-बार जाती है, जाकर लौट

आती है। इश्क़ है, दीवानगी है उसकी। एक हद तक सफाई देती है, फिर मौन हो जाती है। गरिमा है उसकी।

मम्मी, बेटी, गुड़िया, सुनो, दीदी, बुआ, चाची और ऐसे ही अनगिनत नामों-रिश्तों के बीच खोई हुई कभी फ़ुरसत के कुछ पलों में अति औपचारिक ढंग से तैयार किये गए स्कूली प्रमाण-पत्रों में अपना नाम पढ़कर खुद को पुकार लेती है। स्वयं की तलाश में, खोयी रही अब तक.... कुछ ऐसी ही ज़िन्दगी है उसकी। मेरे लिए स्त्री का यही पर्याय है।

'स्त्री' ईश्वर की गढ़ी वह खूबसूरत कृति है, जिसके बिना सृष्टि की कल्पना ही नहीं की जा सकती। ये वो धुरी है जिसके गर्भ में जीवन पनपता है। नारी, 'नर' की महिमा है, गरिमा है, ममता की मूरत है, अन्नपूर्णा है, कोमल भाषा है, निर्मल मन और स्वच्छ हृदय है, समर्पिता है। और इन सबसे भी अहम बात वो सिर्फ़ एक ज़िस्म ही नहीं, उसमें जां भी बसती है। अपने हिस्से के सम्मान की हक़दार है वो।

हमें बदलना ही होगा अपने-आप को, अपनी सोच को, अपने आसपास के माहौल को, नारी को उपभोग की वस्तु समझने वालों की कुत्सित सोच को.. अब बिना डरे हुए सामना करना ही होगा उन पापियों का, समाज के झूठे ठेकेदारों का,

बेनक़ाब करना है हर घिनौने चेहरे की सच्चाई को... साथ देना होगा, उस नारी का, उम्मीद की लौ जिसकी आँखों में अब भी टिमटिमाती है, जिसे अब भी विश्वास है बदलाव पर!

स्त्री को कोई अपेक्षा नहीं सिवाय इसके कि उसे 'इंसान' समझा जाए, उसे भी उसके हिस्से का मान मिले। उसके साथ निर्ममता और क्रूरतापूर्ण व्यवहार न हो। वो देवी बनने की इच्छुक तो बिल्कुल भी नहीं। जहां तक 'फेमिनिज्म' की बात है तो फेमिनिज्म को बवाल समझने वालों के लिए यह जानना आवश्यक है कि स्त्री की लड़ाई पुरुष वर्ग के ख़िलाफ़ नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्थाओं के ख़िलाफ़ है, जिसमें समाज का हर वर्ग सम्मिलित है। विज्ञान का नियम है, किसी वस्तु को दबाने पर वो दुगुनी शक्ति से उछलती है, कुछ ऐसा ही स्त्रियों के साथ भी हुआ है।

अपने कर्त्तव्यों के पूर्ण निर्वहन के साथ, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक एवं सचेत रहकर सत्य के पक्ष में खड़े हो, अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाना ही 'फेमिनिज्म' है। नारी आंदोलन, नारी अधिकारवाद, स्त्री सशक्तिकरण, स्त्रीत्व ज़िंदाबाद के नाम पर हो रही तमाम रैलियों, भाषणों और टिमटिमाती मोमबत्तियों को मैं खारिज़ करती हूं। यदि हम 'स्त्री'

अपने-अपने घरों में बच्चों को सबका समान रूप से सम्मान करना सिखायें, हर धर्म का आदर करने का पाठ दें और स्वयं भी यही करें तो एक परिवार तो स्वस्थ मानसिकता वाला बन ही जायेगा और सभी यही करें तो सकारात्मक समाज की स्थापना उतनी मुश्किल नहीं, जितनी प्रक्षेपित की जाती रही है।

सशक्त क्या होना चाहिए?

महिला सशक्तिकरण के कारण महिलाओं की जिंदगी में बहुत से बदलाव हुए।

(1) महिलाओं ने हर कार्य में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना शुरू किया है।

(2) महिलाएँ अपनी जिंदगी से जुड़े फैसले खुद कर रही हैं।

(3) महिलाएँ अपने हक के लिए लड़ने लगी हैं और धीरे धीरे आत्मनिर्भर बनती जा रही हैं।

(4) पुरुष भी अब महिलाओं को समझने लगे हैं, उनके हक भी उन्हें दे रहें हैं।

(5) पुरुष अब महिलाओं के फैसलों की इज्जत करने लगे हैं। कहा भी जाता है कि-हक माँगने से नही मिलता छीनना पड़ता है और औरतों ने अपने हक अपनी काबिलियत से और एक जुट होकर मर्दों से हासिल कर लिए हैं।

महिला अधिकारों और समानता का अवसर पाने में महिला सशक्तिकरण ही अहम भूमिका निभा सकती है। क्योंकि स्त्री सशक्तिकरण महिलाओं को सिर्फ गुजारे-भत्ते के लिए ही तैयार नहीं करती, बल्कि उन्हें अपने अंदर नारी चेतना को

जगाने और सामाजिक अत्याचारों से मुक्ति पाने का माहौल भी तैयारी करती है।

जिस तरह से भारत आज दुनिया के सबसे तेज आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार हुआ है, उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिए महिलाओं के विरुद्ध बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा जो समाज की पितृसत्तामक और पुरुष युक्त व्यवस्था है। यह बहुत आवश्यक है कि हम महिलाओं के विरुद्ध अपनी पुरानी सोच को बदलें और संवैधानिक तथा कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाए।

भले ही आज के समाज में कई भारतीय महिलाएँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर, वकील आदि बन चुकी हो, लेकिन फिर भी काफी सारी महिलाओं को आज भी सहयोग और सहायता की आवश्यकता है। उन्हें शिक्षा, और आजादीपूर्वक कार्य करने, सुरक्षित यात्रा, सुरक्षित कार्य और सामाजिक आजादी में अभी भी और सहयोग की आवश्यकता है। महिला सशक्तिकरण का यह कार्य काफी

महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत की सामाजिक-आर्थिक प्रगति उसके महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक प्रगति पर ही निर्भर करती है।

महिला सशक्तिकरण महिलाओं को वह मजबूती प्रदान करता है, जो उन्हें उनके हक के लिए लड़ने में मदद करता है। हम सभी को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए। इक्कीसवीं सदी नारी जीवन में सुखद सम्भावनाओं की सदी है। महिलाएँ अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी हैं। आज की नारी अब जाग्रत और सक्रीय हो चुकी है। किसी ने बहुत अच्छी बात कही है "नारी जब अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियों एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी, तो विश्व की कोई शक्ति उसे नहीं रोक पाएगी।" वर्तमान में नारी ने रुढ़िवादी बेड़ियों को तोड़ना शुरू कर दिया है। यह एक सुखद संकेत है। लोगों की सोच बदल रही है, फिर भी इस दिशा में और भी प्रयास करने की आवश्यकता है।

समस्याएं

युग-यग सें चला आ रहा हो यह स्व मे एक हीं हैं, पर अनगिनत रूप-रंगों मे प्रकट होता हैं।

यह तो मानो हुई बात हैं कि पुरुष सारा दोष स्त्री पर थोपता है और उसी प्रकार स्त्री सारा दोष पुरुष पर थोपती हैं। पर, वास्तव में, दोष समान रूप में दोनों का मानना चाहिये और दोनों में से किसी को भी अपने-आपको दूसरों से बढ़ा मानने का गर्व नहीं करना चाहिये। बल्कि जबतक प्रधानता और हीनता का यह विचार छू नहीं कर दिया जायेगा तबतक कोई भी वस्तु या कई भी व्यक्ति इस भ्रांति को दूर नहीं कर सकेगा जो मानवजाति को दो विरोधी शिविरों मे बांट देती है, और न तबतक समस्या का कोई समाधान हीं हो पायेगा।

इस समस्या पर बहुत कुछ कहा और लिखा गया है। इस पर इतने दृष्टिकोण से विचार किया गया है कि इसके सब पक्षों का विवेचन करने के लिये एक पोथा भी पर्याप्त न होगा। साधारणतया, सिद्धांत बहुत अच्छे होते हैं और हर एक के अपने-अपने गुण भी होते हैं, किंतु व्यवहार में ये उतने सुखदायी नहीं सिद्ध होते। मुझे नहीं मालूम कि सफलता के स्तर पर हम पाषाण-युग से कुछ आगे बढ़े हैं या नहीं। कारण,

पारस्परिक संबंध मे पुरुष और स्त्री एक दूसरे के पूरी तरह निरंकुश स्वामी और साथ हीं कुछ दयनीय दास भी होते हैं ।

हां, सचमुच दास; क्योंकि जब तक मनुष्य में इच्छाएं हैं, अभिरुचि और आसक्तिया हैं, तब तक वह इन वस्तुओं का और उन व्यक्तियों का भी दास बे जिन पर वह इन इच्छाओं की पूर्ति के लिये निर्भर रहता है ।

अतएव, स्त्री पुरुष की दासी इसलिये हैं कि वह पुरुष और उसके बल के प्रति आकर्षण अनुभव करती हैं, उसके अंदर घर बसाने की इच्छा होती हैं, वह घर से प्राप्त होनेवाली सुरक्षा को चाहती हैं, और अंत में उसके अंदर मातृत्व के प्रति मोह भी होता है। इधर पुरुष भी स्त्री का दास हैं, अधिकार-भावना के कारण, शक्ति और प्रभुत्व की तृष्णा के कारण, काम-वासना की तृप्ति की इच्छा तथा विवाहित जीवन की छोटी-मोटी सुख-सुविधाओं के प्रति आसक्ति के कारण।

इसलिये कोई भी कानून स्त्री को तब तक बंधन मुक्त नहीं कर सकता जब तक वह स्वयं हीं बंधन मुक्त न हो जाये; इसी प्रकार पुरुष भी अधिकार जमाने की आदतों के होते हुए तब तक दासता से मुक्त नहीं हो सकता जब तक वह अपने अंदर की सारी दासता से मुक्त न हो जाये।

यह गुप्त संघर्ष की अवस्था जिसे प्रायः कोई स्वीकार नहीं करता; किंतु जो, अच्छे-से-अच्छे दृष्टांत मे भी, सदा अवचेतन में उपस्थित रहती है, तब तक अनिवार्य प्रतीत होती हैं, जब तक मनुष्य पूर्ण चेतना के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिये, 'सर्वोच्च सत्ता' के साथ एक होने के लिये, अपनी सामान्य चेतना से ऊपर नहीं उठ जाते। कारण, जब तुम उस उच्च चेतना को प्राप्त कर लेते हो तो देखते हो कि क्या होता है

समाधान

विभिन्न समाज शास्त्रियों विद्वानों समाजसेवियों के अनुसार महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों को रोकने के लिए निम्नलिखित समाधान हो सकते हैं। सिस्टम में सुधार लाने के लिए महिलाओं के साथ प्रशासन को भी चौकस रहना पड़ेगा अगर रक्षक ही भक्षक बन जाए तो फिर महिलाओं को कोर्ट का सहारा अति आवश्यक है।

- हर शहर में महिलाओं के लिए विशेष पुलिस स्टेशन हो या हर थाने में हर समय कम से कम एक महिला पुलिस अधिकारी हो रात की गश्त के दौरान भी महिला पुलिस मौजूद हो।
- महिला अधिकारों के से संबंधित कानूनों को और भी अधिक मजबूत किया जाए।
- पुलिस को भी इस तरह की ट्रेनिंग दी जाए ताकि वह जन भावनाओं को अच्छे ढंग से समझते हुए सुरक्षित समाज की स्थापना में अहम योगदान दे सकें ।
- सार्वजनिक स्थानों पर बड़े अक्षरों में पुलिस से हेल्पलाइन नंबर प्रदर्शित किए जाएं।

- पुलिस का आम जनों के साथ आपस में बेहतर तालमेल हो ताकि महिलाओं के मन में आत्मसुरछा की भावना बनी रहे।
- कानून में बदलाव की जरूरत नहीं बस उसे हाईटेक करने की आवश्यकता है।
- आवागमन के साधनों व सार्वजनिक स्थानों पर समय-समय पर जांच अभियान चले। सादे लिबास में पुलिस तैनात रहे। रक्षक से भक्षक बने लोगों के खिलाफ महिलाएं गोलबंद हो और प्रशासन व कानून भी संवेदनशील हो ।
- न्यायिक प्रक्रिया तेज हो दोषियों को तुरंत और सख्त सजा मिले जघन्य हत्या जैसे केस के लिए उम्र कह दिया मृत्युदंड की सजा मिलनी चाहिए।
- शैक्षणिक व्यवस्था में ही ऐसा माहौल बनाया जाए कि लड़के लड़की में मित्र वत संबंध का विकास हो दोनों के बीच भेदभाव किए बिना लड़कियों में साहस का संचार करें बजाए, उन्हें दब्बू बनकर या डर कर रहने के।
- महिलाओं की सुरक्षा के लिए जितने भी कानून हैं उनकी जानकारी महिलाओं को देनी चाहिए।

- सिस्टम को सुधारने के लिए निचले स्तर से प्रयास शुरू करने की जरूरत है। परिवार में ही माता पिता तथा संबंधियों को मानसिकता बदलने और लड़के-लड़की में विभेद करना बंद करना होगा।
- समाज में महिलाओं की दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए विशेष सुरक्षा अधिकारी नियुक्त हो और नशाखोरी पर अंकुश लगाया जाए। पुलिस की छवि ऐसी बनेगी अपराधी डरें, न कि आम आदमी।
- पुलिस में जनता के हित में निर्णय लेने का साहस लेना चाहिए इस विभाग में जेंडर संवेदनशीलता की सर्वाधिक जरूरत है।
- जागरूकता अभियान चलाने के साथ उन्हें आत्मरक्षा के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दिलानी चाहिए।
- पुलिस को लोगों के साथ सरकार आत्मक बर्ताव करने का प्रशिक्षण दिया जाए।।

किरण बिचपुरिया,
रायपुर छत्तीसगढ़

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

किरण बिचपुरिया

मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ

मैं स्त्री हूँ, सहती हूँ
तभी तो तुम कर पाते हो गर्व
अपने पुरुष होने पर
मैं झुकती हूँ, तभी तो ऊँचा उठ पाता है
तुम्हारे अंहकार का आकाश।

मैं सिसकती हूँ,
तभी तुम कर पाते हो खुलकर ठहाके
हूँ व्यवस्थित मैं
इसलिए तुम रहते हो अस्त व्यस्त।
मैं मर्यादित हूँ
इसीलिए तुम लांघ जाते हो
सारी सीमायें।

स्त्री हूँ मैं
हो सकती हूँ पुरुष
पर नहीं होती
रहती हूँ स्त्री इसलिए
ताकि जीवित रहे तुम्हारा पुरुष
मेरी नम्रता, से ही पलता है
तुम्हारा पौरुष

मैं समर्पित हूँ
इसीलिए हूँ उपेक्षित, तिरस्कृत।
त्यागती हूँ अपना स्वाभिमान
ताकि आहत न हो तुम्हारा अभिमान
जीती हूँ असुरक्षा में
ताकि सुरक्षित रह सके
तुम्हारा दंभ।

सुनो व्यर्थ नहीं हूँ मैं...
जो तुम सिध्द करने में लगे हो
बल्कि मेरे कारण ही हो तुम अर्थवान
अन्यथा अनर्थ का पर्यायवाची होकर
रह जाते तुम।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/–
978-81-951277-2-6